# Vardhaman Mahaveer Open University, Kota

# वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

## M.A. (Previous) Sanskrit

## एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

## INTERNAL ASSIGNMENT

आंतरिक मूल्यांकन / सत्रीय कार्य

MASA 01 to MASA 04

सत्र : 2011–12

Vardhaman Mahaveer Open Uversity

Rawatbhata Road, Kota-324021 (Raj.)

Internal Assignment – 1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-01 वैदिक साहित्य एवं तुलनात्मक भाषा विज्ञान Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–01 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित मंत्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्
देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद रोदसी अभ्यसेतां
नृम्णस्य महना स जनास इन्द्रः।।

**अथवा**

प्र विष्णवे शुषमेतु मन्म
गिरिक्षित उरूगायाय वृष्णे।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थ–
मेको विममे त्रिभिरित्पदेभि :।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित मंत्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

अहं रूद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवै : ।
अहं मित्रावरुणोभाबिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।।

**अथवा**

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ।।

प्र. 2. भाषा की उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धान्तों का निरूपण कीजिये। 7

**अथवा**

लिपि के विकास क्रम पर एक निबन्ध लिखिये।

प्र. 3.(i) नासदीय सूक्त का दार्शनिक विवेचन संक्षेप में कीजिये। 3

**अथवा**

प्रमुख ध्वनि नियमों का संक्षेप में निरूपण कीजिये।

प्र. 3.(ii) अधोलिखितमन्त्रस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।

**अथवा**

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ।।

Internal Assignment – 2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-01 वैदिक साहित्य एवं तुलनात्मक भाषा विज्ञान Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–01 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित मंत्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

यं क्रन्दसी संयति विuयेते,
परेप्रेवर उभया अमित्राः।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा,
नाना हवेते स जनास इन्द्रः।।

**अथवा**

यस्य त्री पूर्णा मधुना पदा–
न्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुतद्या–
मेको दाधार भुवनानि वि३वा।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित मंत्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रrाद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आविवेश।।

**अथवा**

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाप्रेत्यतिष्ठद्दशाXäलम्।।

प्र. 2. भाषा विज्ञान के अध्ययन के प्रकार बताते हुए प्रमुख अंगों का विवेचन कीजिये। 7

**अथवा**

ध्वनि परिवर्तन के कारणों पर एक निबन्ध लिखिये।

प्र. 3..(i) वाक् सूक्तम् के आधार पर 'वाक्' का स्वरूप निरुपण कीजिये। 3

**अथवा**

प्राकृत भाषा के प्रमुख भेदों का संक्षेप में निरूपण कीजिये।

प्र. 3..(ii) अधोलिखितमन्त्रस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसVल्पमस्तु।।

**अथवा**

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेÙभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिD यदजिरं जविD तन्मे मनः शिवसVल्पमस्तु।।

Internal Assignment – 1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-02 | ललित साहित्य एवं नाटक | Max. Marks : 20

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–02 | | पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।

**अथवा**

तां जानीथाः परिमितकथां जीवितं मे द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।
गाढोत्कठां गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम्।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

स्वच्छन्दमेकचरमुज्ज्वलदानशक्ति–
मुत्सेकिना मदबलेन विगाहमानम्।
बुद्ध्या निगृह्य वृषलस्य कृते क्रियाया–
मारण्यकं गजमिव प्रगुणीकरोमि।।

**अथवा**

मुहुर्लक्ष्योद्भेदा मुहुरधिगमाभावगहना
मुहुः सम्पूर्णाXी मुहुरतिकृशा कार्यवशतः ।
मुहुर्नश्यiीजा मुहुरपि बहुप्रापितफले–
त्यहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयविदः ।।

प्र. 2. गीतिकाव्य के उद्भव और विकास पर एक लेख लिखिये। 7

**अथवा**

संस्कृत के प्रमुख नाटककारों का उल्लेख करते हुए मुद्राराक्षस नाटक की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

प्र. 3..(i) मृच्छकटिकम् प्रकरण के नायक चारुदत्त का चरित्र चित्रण कीजिये। 3

**अथवा**

कालिदास की काव्यकला पर टिप्पणी लिखिये।

प्र. 3..(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

शून्यमपुत्रस्य गृहं, चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।
मूर्खस्य दिशः शून्याः, सर्वं शून्यं दरिद्रस्य।।

**अथवा**

वेगं करोति तुरगस्त्वरितं प्रयातुं,
प्राणव्ययान्न चरणास्तु तथा वहन्ति।
सर्वत्र यान्ति पुरुषस्य चलाः स्वभावाः
खिन्नास्ततो हृदयमेव पुनर्विशन्ति।।

Internal Assignment – 2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-02 | ललित साहित्य एवं नाटक | Max. Marks : 20

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–02 | पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी–
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ऽङ्गनानां
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।।

**अथवा**

तामायुष्मन्मम च वचनादात्मनश्चोपकर्तुं
ब्रूया एवं तव सहचरो रामगिर्याश्रमस्थः।
अव्यापóाः कुशलमलबे! पृच्छति त्वां वियुक्तः
पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति।।

**अथवा**

दुष्कालेऽपिकलावसज्जनरुचौ प्राणैः परं रक्षता
नीतं येन यशस्विनाऽतिलघुतामौशीनरीयं यशः।
बुद्धानामपि चेष्टितं सुचरितैः क्लिC विशुद्धात्मना
पूजार्होऽपि स यत्कृते तव गतोवध्यत्वभेषोऽस्मि सः।।

प्र. 2. संस्कृत रूपकों की विशेषताऐं बताते हुए संस्कृत के प्रमुख नाटककारों का परिचय दीजिये। 7

**अथवा**

कालिदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर लेख लिखिये।

प्र. 3..(i) मृच्छकटिकम् की कथावस्तु की समीक्षा कीजिये। 3

**अथवा**

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियों का निरूपण कीजिये।

प्र. 3..(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या 3

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति।।

**अथवा**

कः श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति।
शंकनीया हि लोकेऽस्मिन् निष्प्रतापा दरिद्रता।।

Internal Assignment – 1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-03 भारतीय दर्शन Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–03 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिXम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्।।

**अथवा**

शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादनं च भवति। यथा लूता तन्तुकार्यं प्रति स्वप्रधानतया निमित्तं स्वशरीरप्रधानतयोपादानं च भवति।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

लिXपरामर्शोऽनुमानम्।

**अथवा**

परमावरणं मल इह सूक्ष्मं मायादि क†चुकं स्थूलम्।
बाह्यं विग्रहरूपं कोशत्रयवेष्टितो ह्यात्मा।।

प्र. 2. न्याय दर्शन के अनुसार कारण के लक्षण तथा भेद पर निबन्ध लिखिये। 7

**अथवा**

परामर्थसार के अनुसार जीवनमुक्त के स्वरूप एवं आचरण पर निबन्ध लिखिये।

प्र. 3.(i) सर्वदर्शन संग्रह के अनुसार बौद्ध दर्शन का निरूपण कीजिये। 3

**अथवा**

सर्वदर्शन संग्रह के आधार पर जैन दर्शन का निरूपण कीजिये।

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य **संस्कृते** टिप्पणी लेख्या :– 3

सत्कार्यवादः (सांख्यकारिका)

**अथवा**

अधिकारी (वेदान्तसारः)

Internal Assignment – 2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-03 भारतीय दर्शन Max. Marks : 20

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–03 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

सत्त्वं लघु प्रकाशकमिCमुपCम्भकं चलं च रजः।
गुरुवरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतोवृत्तिः।।

**अथवा**

अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किंचिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात् ''देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम्'' इत्यादि श्रुतेश्च।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्'

**अथवा**

नानाविधवर्णानां रूपं धत्ते यथामलः स्फटिकः।
सुरमानुष पशुपादपरूपत्वं तद्वदीशोऽपि।।

प्र. 2. न्याय दर्शन के अनुसार हेत्वामास के लक्षण तथा भेद पर निबन्ध लिखिये। 7

**अथवा**

परामर्थसार के अनुसार बन्धन के स्वरूप पर निबन्ध लिखिये।

प्र. 3.(i) सर्वदर्शन संग्रह के आधार पर चार्वाक दर्शन की प्रमाणमीमांसा का निरूपण कीजिये। 3

**अथवा**

सर्वदर्शन संग्रह के आधार पर चार्वाक दर्शन की तत्त्वमीमांसा का निरूपण कीजिये।

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य **संस्कृते** टिप्पणी लेख्या :— 3

जीवन्मुक्तः (वेदान्तसारः)

**अथवा**

सूक्ष्म शरीरः (सांख्यकारिका)

Internal Assignment – 1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-04 भारतीय काव्यशास्त्र एवं व्याकरण Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–04 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

वाक्यं रसात्मकं काव्यं दोषास्तस्यापकर्षकाः।
उत्कर्ष हेतवः प्रोक्ता गुणालVाररीतयः।।

**अथवा**

व्यापारोऽस्ति विभावादेर्नाम्ना साधारणीकृतिः
तत्प्रभावेण यस्यासन् पाथोधिप्लवनादयः।
प्रमाता तदभेदेन स्वात्मानं प्रतिपद्यते
उत्साहादि समुद्रवेधः साधारण्याभिमानतः।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

रंगपीठस्य पार्श्वे तु कर्तव्या मत्तवारणी।
चतुःस्तम्भसमायुक्ता रंगपीठ–प्रमाणतः।।
अध्यर्ध हस्तोत्सेधेन कर्तव्या मत्तवारणी।
उत्सेधेन तयोस्तुल्यं कर्तव्यं रंगपीठकम्।।

**अथवा**

गुरूपदेशादध्येतुं शास्त्रं जडधियोऽप्यलम्।
काव्यं तु जायते जातु कस्यचित्प्रतिभावतः।।

प्र. 2. साहित्य दर्पण के आधार पर लक्षणा शब्द शक्ति के लक्षण और मुख्य भेदों का निरूपण कीजिये। 7

**अथवा**

नाट्यशास्त्र के अनुसार वृत्तियों के भेद एवं स्वरूप पर एक लेख लिखिये।

प्र. 3.(i) वक्रोक्ति–सिद्धान्त के प्रमुख ग्रन्थ एवं चिन्तकों पर टिप्पणी लिखिये। 3

**अथवा**

काव्यालङ्कार की दृष्टि से काव्य का प्रयोजन बताइये।

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य **संस्कृते** टिप्पणी लेख्या – 3

णिजन्त– प्रक्रिया

**अथवा**

आत्मनेपद– प्रक्रिया

Internal Assignment – 2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Previous) Sanskrit एम.ए. (पूर्वार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-04 भारतीय काव्यशास्त्र एवं व्याकरण Max. Marks : 20

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–04 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः।
वाक्योच्चयो महावाक्यं इत्थं वाक्यं द्विधा मतम्।।

**अथवा**

सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रrाास्वादसहोदरः।।
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

ग्रहणे धारणे ज्ञाने प्रयोगे चास्य सत्तम।
अशक्ता भगवन् देवा अयोग्या नाट्यकर्मणि।।
य इमे वेदगुsज्ञा मुनयः संशितव्रताः।
एतेÿस्य ग्रहणे शक्ताः प्रयोगे धारणे तथा।।

**अथवा**

संस्कृतानाकुलश्रव्यशब्दार्थपदवृत्तिना।
गद्येन युक्तोदात्तार्था सोच्छ्वासाख्यायिका मता।।

प्र. 2. साहित्य दर्पण के आधार पर रस के स्वरुप का निरूपण करते हुए रसास्वाद के प्रकार बताइये। 7

**अथवा**

नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्य मण्डप के माप एवं निर्माण विधि पर एक लेख लिखिये।

प्र. 3.(i) ध्वनि विरोधी आचार्यों का प्रतिपादन कीजिये। 3

**अथवा**

रीति–सिद्धान्त के प्रमुख ग्रन्थ एवं चिन्तकों पर टिप्पणी लिखिये।

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य **संस्कृते** टिप्पणी लेख्या – 3

य¾ न्त– प्रकरण

**अथवा**

परस्मैपद– प्रक्रिया

Vardhaman Mahaveer Open University, Kota

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

M.A. (Final) Sanskrit

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

# INTERNAL ASSIGNMENT

आंतरिक मूल्यांकन / सत्रीय कार्य

MASA 05 to MASA 09

सत्र : 2011–12

Vardhaman Mahaveer Open Uversity

Rawatbhata Road, Kota-324021 (Raj.)

Internal Assignment –1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-05 गद्य तथा काव्य Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–05 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

दृष्ट्वा च तां समुपजातविस्मयस्याभून्मनसि महीपतेः – 'अहो! विधातुरस्थाने रूप–निष्पादन–प्रयत्नः। तथाहि, यदि नामेयमात्मरूपोपहसिताशेषरूपसम्पदुत्पादिता, किमर्थमपगत–स्पर्श–सम्भोग–सुखे कृतं कुले जन्म।

मन्ये च 'मातX्–जाति–स्पर्श–दोष–भयादस्पृशतेयमुत्पादिता प्रजापतिना, अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य। नहि करतल–स्पर्श–क्लेशितानामवयवानामीदृशी भवति कान्तिः।'

**अथवा**

आसीच्च मे मनसि 'अहो! मोहप्रायमेतेषां जीवितम्, साधुजन–गर्हित†च चरितम्। तथाहिपुरुष–पिशितोपहारे धर्म्मबुद्धिः, आहारः साधुजनविगर्हितो मधुमांसादिः, श्रमो मृगया, शास्त्रं शिवारुतम्, उपदेष्टारः सदसतां कौशिकाः, प्रज्ञा शकुनिज्ञानम्, परिचिताः श्वानः, राज्यं शून्यास्वटवीषु, आपानकमुत्सवः, मित्राणि क्रूरकर्मसाधनानि धनूँषि, सहाया विषदिग्धमुखा भुजXा इव सायकाः, गीतमुत्साहकारि मुग्धमृगाणाम्, कलत्राणि बन्दीगृहीताः परयोषितः, क्रूरात्मभिः शार्दुलैः सह संवासः, पशुरुधिरेण देवतार्च्चनम्, मांसेन बलिकर्म, चौर्य्येण जीवनम्, भूषणानि भुजXमणयः, वनकरि–मदैरXरागः, यस्मि6व कानने निवसन्ति, तदेवोत्खातमूलमशेषतः कुर्वते।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

संक्षिप्तस्याप्यतोऽस्यैव वाक्यस्यार्थगरीयसः।
सुविस्तरतरा वाचो भाष्यभूता भवन्तु में।।

**अथवा**

कृतापचारोऽपि परैरनाविष्कृतविक्रियः।
असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा।।

प्र. 2. 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिये। 7

**अथवा**

बिल्हण की काव्य–शैली पर एक निबन्ध लिखिये।

प्र. 3. (i) निम्नलिखित श्लोक का सप्रसंग अनुवाद कीजिये – 3

अनभ्रवृष्टिः श्रवणामृतस्य सरस्वतीविभ्रमजन्म–भूमिः।
वैदर्भरीतिः कृतिनामुदेति सौभाग्यलाभप्रतिभूः पदानाम्।।

**अथवा**

प्रस्थाप्य शक्रं धृतिमान्भवेति हर्षाश्रुपारिप्लवदृक्सहस्रम्।
स शासनात्प¾ ्करुहासनस्य मरुद्विपक्षक्षयदीक्षितोऽभूत्।।

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

**अथवा**

अधोलिखितेषु एकस्योपरि **संस्कृते टिप्पणी** लेख्या –

बाणभट्टः / शिशुपालवद्यम् / विक्रमाVदेवचरितम्

Internal Assignment –2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-05 गद्य तथा काव्य Max. Marks : 20

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–05 पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

अनेन च समयेन परिणतो दिवसः। स्नानोत्थितेन मुनिजनेनार्घविधिमुपपादयता यः क्षितितले दत्तः तमम्बर–तलगतः साक्षादिव रक्तचन्दनाXरागं रविरुदवहत्। ऊध्वमुखैरर्कबिम्ब–विनिहित–दृष्टिभिरूष्मपैस्तपोधनैरिव परिपीयमान–तेजःप्रसरो विरलातपस्तनिमानमभजत्। उद्यत्सप्तर्षिसार्थ–स्पर्श–परिजिहीर्षयेव संहृत–पादः पारावत–पाद–पाटलरागो रविरम्बरतलादवालम्बत। आलोहितांशु–जालं जलशयनमध्यगतस्य मधु–रिपोर्विगलन्मधुधारमिव नाभिनलिनं प्रतिमागतमपरार्णवे सूर्य्यमण्डलमलक्ष्यत। विहायाऽम्बरतलम् उन्मुच्य च कमलिनीवनानि शकुनय इव दिवसावसाने तरु–शिखरेषु पर्वताग्रेषु च रविकिरणाः स्थितिमकुर्वत। आलग्नलोहितातपच्छेदा मुनिभिरालम्बित–लोहितवल्कला इव तरवः क्षणमदृश्यन्त।

**अथवा**

क्रमेण च रविरस्तं गत इत्युदन्तमुपलभ्य जातवैराग्यो धौत–दुकूल–वल्कल–धवलाम्बरः सतासन्तःपुरः, पर्य्यन्तस्थिततनुस्तिमिर–तमाल–वृक्ष – लेखम्, सप्तर्षि – मण्डलाध्युषितम्, अरुन्धतीस†ाचरणपूतम्, उपहिताषाढम्, आलक्ष्यमाणमूलम्, एकान्तस्थित–चारुतारकमृगम् अमरलोकाश्रममिव गगनतलम् अमृत–दीधितिरध्यतिष्ठत्।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

रत्नस्तम्भेषु संक्रान्तप्रतिमास्ते चकाशिरे।
एकाकिनोऽपि परितः पौरुषेयवृता इवं

**अथवा**

मखविघ्नाय सकलमित्थमुत्थाप्य राजकम्।
हन्त! जातमजातारेः प्रथमेन त्वयाऽरिणा।।

प्र. 2. 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिये। 7

**अथवा**

विक्रमाXदेवचरितम् का ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए चालुक्यवंशीय राजाओं के प्रताप का निरूपण कीजिये।

प्र. 3. (i) निम्नलिखित श्लोक का सप्रसंग अनुवाद कीजिये – 3

अशेषविघ्नप्रतिषेधदक्ष–मन्त्राक्षतानामिव दि¾ ्मुखेषु।
विक्षेपलीला करशीकराणां करोतु वः प्रीतिमिभाननस्य।।

**अथवा**

उत्खातविश्वोत्कटकण्टकानां यत्रोदितानां पृथिवीपतीनाम्।
क्रीडागृहप्रा¾ ्गणलीलयैव बभ्राम कीर्तिर्भुवनत्रयेऽपि।।

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वामनसयो –
रतद्व्यावृत्त्या चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।

**अथवा**

अधोलिखितेषु एकस्योपरि **संस्कृते टिप्पणी** लेख्या –

पुष्पदन्तः/कादम्बरी/गघ कवीनां निकषं वदन्ति

Internal Assignment –1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-06 | नाटक तथा नाट्यशास्त्र | Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–06 | | पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

रामः – शान्तं पापम्, शान्तं पापम्। दुर्जना नाम पौरजानपदाः?
इक्ष्वाकुवंशोऽभिमतः प्रजानां, जातं च दैवाद्वचनीयबीजम्।
यच्चाद्भुतं कर्म विशुद्धिकाले, प्रत्येतु कस्तद्यदि दूरवृत्तम्।।

**अथवा**

रामः – अयि चण्डि जानकि! इतस्ततो दृश्यसे, नानुकम्पसे।
हा हा देवि स्फुटति Nदयं, ध्वंसते देहबन्धः,
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि।
सीदóान्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा,
विष्व¾्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि?।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी
लोके हारि च वत्सराजचरितं नाटK च दक्षा वयम्।।
वस्त्वेकैकमपीह वाf छतफलप्राप्तेः पदं किं पुन–
र्मjाग्योपचयादयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः।।

**अथवा**

वसुभूतिः– (समन्तादवलोक्य) अहो वत्सेश्वरस्यानुभावः। इह हि–
आक्षिप्तो जयकुTरेण तुरगाóिर्वर्णयन्व„भा–
न्संगीतध्वनिना Nतः क्षितिभृतां गोDीषु तिDन्क्षणम्।

सद्यो विस्मृतसिंहलेन्द्रविभवः कक्षाप्रदेशेऽप्यहो
द्वाः स्थेनैव कुतूहलेन महता ग्राम्यो यथाऽहं कृतः।।

प्र. 2. उत्तररामचरितम् की नाटकीय विशेषताओं पर एक निबन्ध लिखिये। 7

**अथवा**

रत्नावली का नाट्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण कीजिये।

प्र. 3. (i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये – 3

भरतमुनि के अनुसार पाँच प्रवृत्तियाँ

**अथवा**

भरतमुनि के अनुसार रसों के अधिकारी देवता

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

संग्रहः सामदानोक्तिःअध्यूहो लिXतोऽनुमा।
अधिबलमभिसंधिः संरब्धं तोटकं वचः।।

**अथवा**

विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः।
आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायी भावो रसः स्मृतः।।

Internal Assignment –2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-06 | नाटक तथा नाट्यशास्त्र | Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–06 | | पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1.(अ) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

लक्ष्मणः–
अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छkविधिना,
तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै–
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य Nदयम्।।

**अथवा**

रामः– कC भोः! कCम्!
दलति Nदयं शोकोद्वेगाद्द्विधा तु न भिद्यते,
वहति विकलः कायो मोहं न मु@ति चेतनाम्।
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः करोति न भस्मसा–
त्प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्।।

प्र. 1.(ब) निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

राजा–(परिक्रामन्)
देवि त्वन्मुखपVजेन शशिनः शोभातिरस्कारिणा
पश्याब्जानि विनिर्जितानि सहसा गच्छन्ति विच्छायताम्।
श्रुत्वा ते परिवारवारवनितागीतानि भृXIXना
लीयन्ते मुकुलान्तरेषु शनकैः सTातलज्जा इव।।

**अथवा**

विजयवर्मा–देव, कृतनिश्चयश्चासौ।
योद्धुं निर्गत्य विन्ध्यादभवदभिमुखस्तत्क्षणं दिग्विभागा–
न्विन्ध्येनेवापरेण द्विपपतिपृतनापीडबन्धेन रुन्धन्।
वेगाद्बाणान्विमु@न्समदकरिघटोत्पिCपत्तिर्निपत्य।

प्रत्यैच्छद्वाञ्छिताप्तिद्विगुणितरभसस्तं रुमण्वान्क्षणेन।।

प्र. 2. 'एको रसः करुण एव' की समीक्षा कीजिये। 7

**अथवा**

हर्ष के व्यक्तित्व और कृतित्व का निरूपण कीजिये।

प्र. 3. (i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये – 3

भरत मुनि के अनुसार चार वृत्तियाँ

**अथवा**

अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

परीभाषा मिथो जल्पः प्रसादः पर्युपासनम्।
आनन्दो वाञ्छितावाप्तिः समयो दुःखनिर्गमः।।

**अथवा**

विरुद्धैरविरुद्धैर्वा भावैर्विच्छिद्यते न यः।
आत्मभावं नयत्यन्यान् स स्थायी लवणाकरः।।

Internal Assignment –1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-07 | साहित्य–शास्त्र | Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–07 | | पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 7

शक्तिर्निपुणता लोकशाdकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।

**अथवा**

शब्दप्रमाणवेद्योþर्थो व्यनक्त्यर्थान्तरं यतः।
अर्थस्य व्यंजकत्वे तच्छब्दस्य सहकारिता।।

प्र. 2. मम्मद द्वारा प्रतिपादित लक्ष्यार्थ एवं व्यX्यार्थ के भेदों का निरूपण कीजिये। 7

**अथवा**

काव्यप्रकाश के अनुसार अर्थ–दोषों का निरूपण कीजिये।

प्र. 3. (i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये – 3

संकेतग्रहः

**अथवा**

काव्यस्यात्मा ध्वनिः

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

सरस्वती स्वादु तदर्थवस्तु निःष्यन्दमाना महतां कवीनाम्।
अलोकसामान्यमभिव्यनक्ति परिस्फुरन्तं प्रतिभाविशेषम्।।

**अथवा**

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवा¾ ˛गनासु।।

Internal Assignment –2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-07 | साहित्य–शास्त्र | Max. Marks : 20

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–07 | | पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 7

स्वसिद्धये पराक्षेपः परार्थं स्वसमर्पणम्।
उपादानं लक्षणं चेत्युक्ता शुद्धैव सा द्विधा।।

**अथवा**

मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः।
उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः।।

प्र. 2. मम्मद के अनुसार गुणीभूत– व्यX्य के आठ भेदों का निरूपण कीजिये। 7

**अथवा**

काव्यप्रकाश के अनुसार गुण एवं अलंकारों का तुलनात्मक विवेचन कीजिये।

प्र. 3. (i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये – 3

काव्यप्रयोजनानि

**अथवा**

ध्वनि–भेदाः

प्र. 3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य **संस्कृत–व्याख्या** लेख्या – 3

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्य¾ ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।।

**अथवा**

काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्व–
स्तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।
केचिद् वाचां स्थितमविषये तत्त्वमूचुस्तदीयं।
तेन ब्रूमः सहृदयमनःप्रीतये तत्स्वरुपम्।।

Internal Assignment –1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-08
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–08

आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास

Max. Marks : 20
पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1. संस्कृत– उपन्यास की परिभाषा देते हुए बीसवीं शताब्दी के प्रमुख संस्कृत उपन्यासकारों का निरूपण कीजिये। 7

**अथवा**

आधुनिक संस्कृत नाट्य साहित्य पर एक लेख लिखिये।

प्र. 2. आधुनिक संस्कृत साहित्य के लघुकाव्यों का परिचय दीजिये। 7

**अथवा**

आधुनिक संस्कृत साहित्य के यात्रावृत्तों का परिचय दीजिये।

प्र. 3. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिये। 3+3
**(एका टिप्पणी अनिवार्यतः संस्कृते लेख्या)**

(i) पण्डिता क्षमाराव
(ii) राजमी उपाध्यायः
(iii) रेवाप्रसाद द्विवेदी
(iv) अभिराज राजेन्द्र मिश्रः
(v) हरिराम आचार्यः

Internal Assignment –2 आंतरिक मूल्यांकन–2

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-08 | साहित्य–शास्त्र | Max. Marks : 20
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–08 | | पूर्णांक : 20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आंतरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र. 1. बीसवीं शताब्दी के प्रमुख संस्कृत गीतिकाव्यों का विवरण प्रस्तुत कीजिये। 7

**अथवा**

आधुनिक संस्कृत निबन्धों का परिचय दीजिये।

प्र. 2. बीसवीं सदी में लिखित संस्कृत महाकाव्यों का परिचय दीजिये। 7

**अथवा**

आधुनिक जैन संस्कृत साहित्य पर एक निबन्ध लिखिये।

प्र. 3. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिये। 3+3
**(एका टिप्पणी अनिवार्यतः संसकृते लेख्या)**

(i) विद्याधरशास्त्री
(ii) श्रीधरभास्करवर्णेकरः
(iii) पkशास्त्री
(iv) ब्रrानन्दशुक्लः
(v) राधावल्लभत्रिपाठी

MA (Final) Sanskrit एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

| Course Code : MASA-09<br>पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–09 | निबन्ध | Max. Marks : 100<br>पूर्णांक : 100 |
|---|---|---|

टिप्पणी :– पाठ्यक्रम एम.ए.एस.ए.–09 जो कि निबन्ध है, इसमें आन्तरिक मूल्यांकन का कोई प्रावधान नहीं है। एम.ए. उत्तरार्द्ध में निबन्ध का प्रश्न पत्र भी अन्य प्रश्न पत्रों की भांति 8 क्रेडित का होगा। यह दो भागों में विभाजित होगा। भाग 'अ' और भाग 'ब' प्रत्येक भाग में पाँच निबन्ध शीर्षक होंगे। विद्यार्थी को प्रत्येक भाग से एक निबन्ध अर्थात् कुल दो निबन्ध लिखने होंगे। प्रत्येक निबन्ध 2500 शब्दों का लिखना होगा। भाग 'अ' में निबन्ध शीर्षक एम.ए. पूर्वार्द्ध के पाठ्यक्रमों में से होगा तथा भाग 'ब' में निबन्ध शीर्षक एम.ए. उत्तरार्द्ध के पाठ्यक्रमों में से होगा। निबन्ध प्रश्न पत्र भी 100 अंक का होगा। इसके अन्तर्गत कोई सत्रीय कार्य (आन्तरिक मूल्यांकन) नहीं होगा।